हिन्दू जनजागृति समिति समर्थित ग्रन्थ !

आदर्श राष्ट्ररचना : राष्ट्रजागृति – खण्ड २

लोकतन्त्रमें फैली दुष्प्रवृत्तियोंके विरुद्ध प्रत्यक्ष कार्य

भूमिका

भारतमें 'रामराज्य', सम्राट युधिष्ठिरका 'धर्मराज्य', छत्रपति शिवाजी महाराजका 'हिन्दवी स्वराज्य' ऐसी आदर्श राज्य-व्यवस्थाओंकी परम्परा है । उनकी तुलनामें आजकी राजनीतिक व्यवस्था – 'भारतका लोकतन्त्र' विफल हो गया है, ऐसा कहना होगा । इसका प्रमुख कारण यह है कि आज राजनीति मदान्ध लोगोंकी सत्तालोलुपताकी भेंट चढ गई है । डॉ. बाबासाहेब अंबेडकरने कहा था, 'किसी देशका संविधान कितना भी अच्छा हो, जबतक उसे क्रियान्वित करनेवाले सक्षम लोग नहीं मिलते, तबतक वह सफल नहीं होता ।' अतः केवल संविधान और लोकतन्त्र अच्छा होनेसे काम नहीं बनता; उसे चलानेवाले नेताओंका निःस्वार्थी, प्रजाहितरक्षक और कर्तव्यपरायण होना भी आवश्यक है।

आज राज्यव्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, पुलिस, प्रशासन, कृषि, सुरक्षा, वित्त आदि सभी क्षेत्रोंमें भ्रष्टाचार, अकार्यक्षमता तथा लालफीताशाही चरमपर है; इस बातका अनुभव हममेंसे प्रत्येकको प्रतिदिन होता होगा । इस विषयमें सबके मनमें असन्तोषकी भावना भी रहती होगी; परन्तु 'हमें इनसे मुक्त होनेका कोई वैकल्पिक मार्ग दिखाई नहीं देता', 'हमारा काम शीघ्र हो' अथवा 'मैं अकेला इस कु-व्यवस्थासे कैसे लड सकूंगा', जैसे विचारोंके कारण हम भ्रष्ट व्यवस्थासे समझौता कर लेते हैं और उसीका एक हिस्सा बन जाते हैं । ऐसा लगातार होता रहा, तो 'रामराज्य' और 'हिन्दवी राज्य' कथाओंतक ही सीमित रह जाएंगे । इस विषयमें केवल सरकारोंको दोष देना और कोसना उचित नहीं । 'यह राष्ट्र मेरा है, यह मातृभूमि मेरी है और मैं इस समाजका अंग हूं', इस विचारके साथ

सामाजिक कर्तव्यके नाते हमें कु-व्यवस्थाके विरुद्ध खडे होना होगा । हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारे महान क्रान्तिकारियोंने हमें जो स्वराज्य सौंपा है; उसका रूपान्तर सुराज्यमें करना हमारा दायित्व है । अतः अब हमें अन्याय सहनेकी अपेक्षा उसके विरोधमें लडकर उसे रोकनेका निश्चय करना चाहिए । इसीलिए इस ग्रन्थमें संक्षेपमें बताया गया है कि वर्तमानमें सामाजिक और राजनीतिक संस्थाओं की ओरसे होनेवाला जनताका शोषण रोकनेके लिए वैधानिक ढंगसे कैसे कार्य करना चाहिए ।

हममेंसे प्रत्येक व्यक्ति जब ध्येयनिष्ठ और संगठित होकर अन्यायकारी दुष्प्रवृत्तियोंके विरुद्ध खडा होगा, तभी हम अपनी अगली पीढीके लिए, रामराज्य समान एक आदर्श राज्यव्यवस्थाका अनुभव करानेवाले, 'हिन्दू राष्ट्र'की आधारशिला रख पाएंगे । यह ग्रन्थ पढकर सभीको आदर्श राष्ट्र-निर्माण हेतु, लोकतन्त्रमें प्रबल हुई सामाजिक और शासकीय दुष्प्रवृत्तियोंके विरुद्ध संवैधानिक मार्गसे संघर्ष करनेकी प्रेरणा मिले, यह प्रभु श्रीरामजीसे प्रार्थना ! – **संकलनकर्ता**

परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके मार्गदर्शक विचारोंसे युक्त सनातनका संग्रहणीय ग्रन्थ

हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाकी दिशा

- हिन्दू सम्प्रदाय एवं संगठनों के एकत्रित कार्यकी आवश्यकता !
- हिन्दू राष्ट्र-स्थापनामें हिन्दुत्वनिष्ठ विचारकों व अधिवक्ताओंका योगदान !
- हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाकी दृष्टिसे सन्तोंके आध्यात्मिक बलका महत्त्व !
- हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाका प्रत्यक्ष कार्य और भविष्यके कार्यकी दिशा !

अनुक्रमणिका

[कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिन्हसे दर्शाए गए हैं ।]

卐 **भूमिका** १०

१. प्राचीन विकसित धर्माधिष्ठित भारत और आजका भ्रष्ट धर्मनिरपेक्ष भारतीय लोकतन्त्र ! १२

२. लोकतन्त्रकी दुष्प्रवृत्तियोंके विरुद्ध संघर्ष करनेका महत्त्व १५

* अन्याय सहना पाप है ! १५

* हिन्दू राष्ट्र-स्थापना (व्यवस्था परिवर्तन)की दृष्टिसे आवश्यक १७

३. लोकतंत्रकी दुष्प्रवृत्तिके विरुद्ध संघर्ष करने हेतु आवश्यक गुण २०

* मानसिक दृष्टिसे २०

* आध्यात्मिक दृष्टिसे २३

४. लोकतन्त्रकी दुष्प्रवृत्तियोंके विरुद्ध संघर्ष करनेकी पद्धति २४

४ अ. 'कांटेसे कांटा निकालने'की भांति लोकतन्त्रकी दुष्प्रवृत्तियोंके विरुद्ध लोकतान्त्रिक मार्गसे संघर्ष करें ! २४

४ आ. सूचना अधिकारका उपयोग करें ! २४

४ इ. परिवाद और ज्ञापन द्वारा अपनी न्यायोचित मांगें सम्बन्धितोंतक पहुंचाएं ! ३५

४ ई. पुलिस थानेमें परिवाद प्रविष्ट करें ! ३५

४ उ. जनान्दोलन और प्रदर्शन करें ! ४०

* आन्दोलनके विषयोंका चयन कैसे करें ? ४१

४ ऊ. जनहित याचिकाओंद्वारा न्यायालयीन मार्गसे संघर्ष करें ! ४६

४ ए. संवैधानिक मार्गसे दुष्प्रवृत्तियोंकी सामाजिक अपकीर्ति करें ! ४८

४ ऐ. व्यक्तिगत स्तरपर संघर्ष करते समय अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार कृत्य करें ! ४९

४ ओ. संगठनात्मक स्तरपर संघर्ष करते समय संगठनके ध्येय, नीति और कार्यशैलीके अनुसार संघर्ष करें ! ५०

५. शासकीय क्षेत्रकी दुष्प्रवृत्तियोंके विरुद्ध संघर्ष कैसे करें ? ५०

* शासकीय कार्यालयकी दुष्प्रवृत्तियां ५२
* पुलिस तन्त्रकी दुष्प्रवृत्तियां ५६
* न्यायतन्त्रकी दुष्प्रवृत्तियां ६३

६. चिकित्सा क्षेत्रकी दुष्प्रवृत्तियां ६८

७. शिक्षा क्षेत्रकी दुष्प्रवृत्तियां ७४

८. वाणिज्य क्षेत्रकी दुष्प्रवृत्तियां ७७

* दुकानदारोंकी दुष्प्रवृत्तियां * पेट्रोलपम्पकी दुष्प्रवृत्तियां ७८
* मिलावटखोर दुष्प्रवृत्तियां ८२
* मिलावटखोरोंके विरोधमें कार्यवाही करनेके लिए उपभोक्ता संरक्षण अधिनियमका उपयोग करें ! ८३
* 'खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम २००६'के प्रावधानोंके आधारपर संघर्ष करें ! ८३

९. पत्रकारिता क्षेत्रकी दुष्प्रवृत्तियां ८९

१०. अश्लीलता फैलानेवाली दुष्प्रवृत्तियां ९४

११. समाजसेवक, देशभक्त एवं धर्मप्रेमियों से आवाहन ! ९५

१२. व्यवस्था-परिवर्तनका पहला चरण है लोकतन्त्रकी दुष्प्रवृत्तियोंके विरुद्ध संघर्ष तथा रामराज्यकी अनुभूति प्रदान करनेवाले 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना है अन्तिम चरण ! ९६